© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

ख्याल गायन शैली एवं घराने का इतिहास पर अध्ययन

Dr. Rajender Singh
Lecturer (Music), Jat Sr. Sec. School
email : rajenderbuwana@gmail.com

सार

ख्याल गायन शैली उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक सुव्यवस्थित, प्रतिष्ठित तथा बेजोड़ शैली है। ख्याल का प्रचलन शास्त्रीय या अभिजात संगीत में अठारहवीं शताब्दी में हुआ है। ख्याल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों के मतभेद हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार ख्याल का प्रवर्तन तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो द्वारा माना गया है। अठारहवीं शताब्दी में ध्रुपद से टूटकर विशेष परिस्थितियों में ख्याल एक नई नवीन विधा के रूप में विकसित एवं प्रचलित हुआ। कहा जाता है कि 15 वीं शताब्दी में जौनपुर के नवाब सुल्तान हुसैन शर्की ने ख्याल को परिचायक स्वरूप प्रदान किया। 18वीं शताब्दी में यह अत्यधिक लोकप्रिय हुआ जिस समय मुहम्मद शाह का शासन काल था।

मुख्य शब्द : ख्याल, गायन, शैली, भारतीय, शास्त्रीय, घराने इत्यादि।

प्रस्तावना

ख्याल गायन शैली - 'ख्याल' हिन्दुस्तानी कण्ठ संगीत की सर्वाधिक प्रिय (लोकप्रिय) शैली 'ख्याल 'फारसी भाषा का शब्द है। ख्याल का अर्थ विचार या कल्पना है। जब एक गायक अपनी प्रौढ़ कल्पना को स्वर , लय , तान के माध्यम से सांगीतिक आकार देता है , तो उसे ख्याल कहा जाता है। प्रसिद्ध सूफी सन्तों की रचना ख्याल कही गई है। कल्पना ख्याल शैली का ही प्राण है।

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

ख्याल गायन शैली का आविष्कार

ख्याल का आविष्कार यह गीत शैली कब से प्रारम्भ हुई , इसके विषय में दो मत पाए जाते हैं। एक तो यह कि इसका आविष्कार ई. 14 में अमीर खुसरो ने किया और दूसरा यह कि इसकी परम्परा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है।

विद्वानों के अनुसार, मध्यकालीन संगीत में प्रचलित 'रूपक' नामक प्रबन्ध से ख्याल शैली का विकास हुआ है। एक मत के अनुसार ख्याल का आविष्कारक अमीर खुसरो को माना जाता है लेकिन उसके ग्रन्थों को देखने पर यह ज्ञात होता है कि उस समय कव्वाली आदि, प्रचार में ख्याल का उल्लेख नहीं मिलता है। तानसेन के समय में भी ख्याल गीत का नाम सुनने में नहीं आता, क्योकि इस समय तो ध्रुपद गायकी प्रचलित थी। ऐसा माना जाता है कि ब्रज के कुछ प्रदेशों में ख्याल नामक लोकगीतों की परम्परा प्राप्त होती है।

'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' नामक वार्ता साहित्य में एक गायिका द्वारा ख्याल और टप्पा नामक गीतों के गायन का उल्लेख है। अत : इस शैली के निर्माण में तत्कालीन ख्याल गीतों का योगदान रहा हो , तो कोई आश्चर्य नहीं है।

18 वीं शताब्दी में सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबारी गायक नियामत खाँ (सदारंग) ने इस शैली को शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठा दिलाई, उनकी ख्याल की अनेक रचनाएँ पीढ़ी - दर - पीढ़ी से प्रचलित रही हैं। सदारंग स्वयं तानसेन के वंशज थे और इनकी अपनी तथा उनके वंशज की गायिकी ध्रुपद गायकी थी, लेकिन युग परिवर्तन की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर इन्होंने ख्याल गीतों का प्रवर्तन किया, जिसमें स्वर सौन्दर्य के आविष्कार के लिए पर्याप्त स्थान था।

ख्याल के भेद

ख्याल गायन लय , परम्परा और विधि के आधार पर तीन प्रकार से भेद किया जाता है -

विलम्बित ख्याल - यह ख्याल गम्भीर प्रकृति का होता है। इसके प्रचारक सदारंग - अदारंग दो भाई माने जाते हैं। ये दोनों भाई मुहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक थे। बड़े ख्याल का

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

आलाप व बोलालाप द्वारा विस्तार किया जाता है। यह शृंगार , शान्त व करुण रस प्रधान होता है। विलम्बित ख्याल का आविष्कार १६ वीं शताब्दी में सुल्तान हुसैन शक ने किया। इसके गीत को स्थायी एवं अन्तरा नामक दो भागों में बाँटा गया है। इसमें एकताल, झूमरा, तिलवाड़ा, आड़ा - चौताल आदि प्रयोग होती हैं।

मध्य लय के ख्याल - इस प्रकार के ख्याल में लय साधारण रहती है। इसमें चंचलता का समावेश होता है। लय के साथ शब्दों व स्वरों का खिलवाड़ करते हुए बोलतान व तान आदि गाते समय गायक को अपनी कला कौशल व प्रतिभा दर्शाने का पूर्ण अवसर मिलता है।

द्रुत ख्याल - इस ख्याल की उत्पत्ति 14 वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने की। अमीर खुसरो ने सर्वप्रथम कव्वाली ख्याल का प्रचार किया और उसी को वर्तमान में द्रुत ख्याल कहकर पुकारा जाता है। इसमें शृंगार या करुण रस प्रधान होते हैं। स्थायी व अन्तरा इसके दो भाग होते हैं। इसमें शब्द अधिक होते हैं एवं ठहराव कम होता है। छोटे ख्याल में आलाप, बोलालाप, बोल - तानें व सरगम प्रमुख रहती हैं। छोटे ख्याल में मध्य लय की तालों - एकताल, त्रिताल, झपताल, तीनताल तथा रूपक आदि का प्रयोग किया जाता है।

घराना का अर्थ कुछ विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी चले आना अर्थात गुरु शिष्य परंपरा को घराना कहा जाता है। गायकी से घराने का निर्माण माना है जैसे एक गायक ने कुछ शिष्य बनाए और उन्होंने कुछ और शिष्य तैयार किए, इस तरह शिष्यों की पीढ़ी चलती गई, जिसे घराना कहा गया।

तानसेन के वंशजों से घराने का निर्माण माना जाता है। तानसेन के पुत्रों के वंशज सेनिए कहलाए, जो ध्रुपद गाते थे व बीन बजाते थे। तानसेन की पुत्री के वंशज बानिए कहलाए, जो ध्रुपद गाते थे व रबाब बजाते थे। प्रत्येक घराने का आवाज लगाने का ढंग, उतार-चढ़ाव का अपना अलग ही ढंग होता है, आवाज का फैलाव भी विशेष ढंग का ही होता है।

घराने का इतिहास

ख़्याल गायन के कुछ प्रमुख घरानों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है -

1. ग्वालियर घराने का इतिहास

ग्वालियर घराने का आरंभ नत्थन पीरबख्श (ई.18) से माना जाता है। यह घराना, जो ख़्याल का सर्व प्रसिद्ध घराना है, वास्तव में लखनऊ घराने से निकला हुआ है।

ग्वालियर घराने की विशेषताएँ - ध्रुपद अंग के ख़्याल, गमक का प्रयोग, जोरदार तथा खुली आवाज, सीधी तथा सपाट तानों का प्रयोग, लयकारी, ठुमरी के स्थान पर तराना गायन, तैयारी पर विशेष बल।

2. आगरा घराने का इतिहास

यह घराना भारत के प्रसिद्ध और प्रमुख ख़्याल शैली के घरानों में से माना जाता है। यह घराना मूलत: ध्रुपद तथा धमार गायकों का रहा। इसलिए इसके ख़्याल गायन पर भी ध्रुपद धमार की तरह नोमतोम व लयकारी का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। आगरा घराने की उत्पत्ति अलख दास तथा मलूक दास द्वारा मानी जाती है।

आगरा घराने की विशेषताएँ - खुली जवारीदार आवाज, ध्रुपद के समान ख़्याल में भी नोम-तोम का आलाप, जबड़े का अधिक प्रयोग, बंदिशदार चीजें, ख़्याल के अतिरिक्त ध्रुपद-धमार में प्रवीणता, बोलतानों की विशेषता, लय-ताल पर विशेष अधिकार।

3. दिल्ली घराने का इतिहास

ख़्याल गायकी का दिल्ली घराना एक प्राचीन घराना है। दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले (1719 ई.) के दरबार में ख़्याल गायकी का प्रचार हुआ। इनके दरबार में नियामत खां (सदारंगद) तथा फिरोज खां (अदारंगद) ख़्याल गीतों व गायकी के निर्माता रहे हैं। मोहम्मद शाह रंगीले के नाम से जितने भी ख़्याल गीत पाए जाते हैं वे इन्हीं दोनों गायकों की कृतियां हैं।'

दिल्ली घराने की विशेषताएँ -इस घराने के कलाकारों का संबंध सारंगी से है यहाँ की गायकी में विलंबित लय की बंदिशों में सूत, मीड़, गमक और लहक का काम विशेष रूप से दिखाई

पड़ता है, इसके अतिरिक्त मध्य लय में इस घराने की मुख्य विशेषता यह है कि स्वरों का आपसी लड़-गुंधाव तथा जोड़-तोड़ होता है।

4. किराना घराने का इतिहास

इस घराने का उद्‌गम प्रसिद्‌ध बीनकार उस्ताद बंदे अली खां से माना जाता है जो अच्छे ध्रुपद गायक व ग्वालियर के प्रसिद्‌ध ख़्याल गायक उस्ताद हद्‌दू खां के दामाद थे। इस घराने का विस्तार कर उसका प्रचार-प्रसार उस्ताद बेहेरे वहीद खां तथा मुख्यत: उस्ताद अब्दुल करीम खां ने किया। उस्ताद अब्दुल करीम खां ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से स्वतंत्र गायकी का निर्माण किया, इनकी गायकी पर बीन का प्रभाव था इनकी आवाज पतली, सुरीली तथा नोकदार थी, इनकी गायकी स्वर प्रधान थी इसलिए किराना घराने की गायकी में स्वर की सूक्ष्मता व सच्चाई साफ दिखाई देती है।

किराना घराना की विशेषताएँ - इस घराने की गायकी मुख्यत: तंत अंग की अर्थात बीन अंग की है। इस घराने में स्वर स्थान का विशेष महत्व है। गायकी चैनदार मानी जाती है। किराना घराने की गायकी में तानक्रिया अत्यंत कृत्रिम होती है। इस घराने में ठुमरी गायकी का विशेष स्थान है। आधुनिक गायक जो किराना घराना से प्रभावित हैं अपनी महफिल में ठुमरी को भी महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।'

5. जयपुर घराने का इतिहास

जयपुर घराने की ख़्याल शैली लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुरानी मानी जाती है। जयपुर दरबार में भारतवर्ष के मशहूर गायक एवं वादक नियुक्त थे। संगीत की गायन एवं वादन दोनों विधाओं को इस घराने से प्रेरणा मिली। ध्रुपद शैली, कव्वाली शैली, एवं वीणा वादन की वाद्‌य शैलियों एवं सितार वादन की शैली इन सबका मिश्रित रूप जयपुर घराने की छटा को निखारता है, जितनी मधुर यहाँ की वादन शैली है उतना ही सुरीला यहाँ का कंठ संगीत है। जयपुर नरेश माधोसिंह के दरबार में सावल खां नामक प्रसिद्‌ध बीनकार थे।

6. पटियाला घराने का इतिहास

पटियाला घराने के प्रवर्तक के रूप में अलीबख्श और फतह अली को माना जाता है। पटियाला घराना वास्तव में दिल्ली घराना ही रहा है, पंजाब की स्थानीय शैलियों से प्रभावित होने के कारण यह पंजाब का घराना बन गया और पटियाला रियासत में पनपने के कारण यही पटियाला घराना कहलाया। यह घराना अपनी तैयारी और विविधतापूर्ण गायकी के लिए प्रसिद्ध है। पटियाला घराने की ठुमरियाँ अपनी कोमलता, रसीलेपन, टप्पे वाली तानों के कारण श्रोताओं के मन पर एक अनिवर्चनीय प्रभाव डालती हैं। इस घराने की गायकी अनेक घरानों से पोषित होकर एक नई रंगीनी से गर्भित है।

पटियाला घराने की विशेषताएँ -इस घराने की गायकी में लय तथा स्वर को समान महत्व दिया जाता है। पटियाला घराने की गायकी मुलायम होते हुए भी गायकी में आवाज खुली एवं वजनदार होती है। ग्वालियर तथा आगरा घराने की लयकारी प्रसिद्ध है किन्तु इस घराने की गायकी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह मानवीय भावों को भावनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने में यह सक्षम है।

7. बनारस घराने का इतिहास

पंडित गोपाल मिश्र को बनारस घराने के प्रवर्तक के रूप में माना जाता है। आपने जीवन पर्यन्त संगीत की साधना करते हुए गायकी में विशिष्ट विशेषताओं का समावेश करके बनारस घराने को जन्म दिया, आपने गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों द्वारा छोटी-छोटी हरकतों के अलावा खटके, मुर्कियों, स्वर के संकोच तथा विस्तार की प्रचलित शैलियों में प्रयत्न करके बनारस घराने के रूप में संगीत के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई। बनारस घराना एक ऐसा घराना है, जिसमें ख़्याल, टप्पा, ठुमरी, ध्रुपद, धमार, तराने आदि संगीत के सभी अंगों के रूपों का समावेश पाया जाता है।

बनारस घराने की विशेषताएँ - इस घराने की गायकी में भाव व भावपूर्ण गायकी का समावेश पाया जाता है। ख़्याल की बंदिशों में शब्दों के उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता है। स्वर के साथ लय पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। बनारस घराने की गायकी में खटका, मुर्की, व हरकतों का विशेषकर प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

ख्याल गायन शैली का प्रचार सबसे अधिक है। एक ही राग को ख्याल गायन शैली के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न तरीकों से गाया जाता है। इसमें गीत रचनाओं का विस्तार भी बहुत अधिक है। गीत रचना एवं गायन शैली दोनों दृष्टियों में ख्याल का विशेष स्थान है। ख्याल गायन शैली में राग के भीतर का सौन्दर्य निर्माण विशेष रूप से गायक की कल्पना एवं प्रतिभा पर निर्भर करता है। ख्याल गायन शैली के विशिष्ट घरानों के विषय में भी जान चुके है कि घरानों के संगीतज्ञों ने अपनी एक अलग गायन शैली का निर्माण कर अत्यधिक सम्मान प्राप्त किया। विभिन्न घरानों की गायन शैली की विशेषताएँ भिन्न-भिन्न हैं तथा कौन कलाकार किस घराने से सम्बन्धित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बृहस्पति, डॉ०, (2004), संगीत बिन्तन प्रथम खण्ड अभिषेक, चण्डीगढ़ |
2. सक्सेना, डॉ0 मघुबाला, (1985), ख्याल शैली का विकास विशाल पब्लिकेशन, कुरूक्षेत्र |
3. परांजपे, डॉ0 शरच्चन्द्र श्रीधर (1992), संगीत ब्रोध मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
4. मिश्र, रमेश, दिल्ली घराने में संगीत का योगदान, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली-- 2011
5. बम्बन, डा. महेन्द्र प्रसाद, अवनद्य वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चंडीगढ़, 2008

6. खण्डे, डा. कलाश्री, मध्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की विकास यात्रा, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1995
7. चौधरी, विमलाकान्त राय, भारतीय संगीत कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, भारतीय
8. ज्ञानपीठ बी-45--47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली, 1975
9. मिश्रा, डॉ. अरूण, उत्तर भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली, 2002
10. उपाध्याय, सूर्यनारायण, मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2005